डेंगू पर नियंत्रण के लिए जीएम मच्छर

ब्राज़ील ने निर्णय लिया है कि वह डेंगू पर नियंत्रण के लिए जेनेटिक रूप से परिवर्तित मच्छर पर्यावरण में छोड़ेगा। यह काम इंग्लैण्ड की एक जैव-टेक्नॉलॉजी कंपनी ऑक्सीटेक व्यापारिक पैमाने पर करेगी। इसके लिए ऑक्सीटेक ब्राज़ील में काम्पीनास नामक स्थान पर एक कारखाना स्थापित करेगी जहां करोड़ों जेनेटिक रूप से परिवर्तित मच्छरों का उत्पादन किया जाएगा।

डेंगू प्रति वर्ष करीब 5 करोड़ लोगों को प्रभावित करता है। इसके खिलाफ न तो कोई दवा है, न ही कोई टीका उपलब्ध है। इसलिए डेंगू फैलाने वाले मच्छर *एडीस एजिप्टी* का सफाया करना ही डेंगू पर नियंत्रण का एकमात्र तरीका है। अप्रैल में ब्राज़ील के राष्ट्रीय जैव सुरक्षा तकनीकी आयोग ने जेनेटिक रूप से परिवर्तित *एडीस एजिप्टी* के व्यापारिक उपयोग की मंज़ूरी दे दी थी। ऐसे जेनेटिक रूप से परिवर्तित नर मच्छर पर्यावरण में छोड़े जाएंगे। ये मादा मच्छरों से समागम करेंगे और इन मादा मच्छरों के बच्चे वयस्क होने से पहले ही मर जाएंगे। यानी ये संतानें कभी संतान पैदा नहीं कर सकेंगी।

खास तौर से डेंगू प्रभावित बाहिया प्रांत के जेकोबिना शहर में करोड़ों जेनेटिक रूप से परिवर्तित मच्छर छोड़े जाएंगे। यदि ब्राज़ील के स्वास्थ्य विभाग ने अनुमति दे दी तो इसे ज़्यादा बड़े पैमाने पर करने की योजना है।

अलबत्ता, अभी कोई नहीं जानता कि यह रणनीति सफल होगी या नहीं। पिछले वर्ष प्रायोगिक तौर पर जेकोबिना में ऐसे मच्छर छोड़े गए थे। साओ पाओलो विश्वविद्यालय की मार्गरेट केपुरो ने इस प्रयोग का अध्ययन किया था और उनकी रिपोर्ट अगले माह तक मिलने की संभावना है। केपुरो का कहना है कि उनके आंकड़े दर्शाते हैं कि मच्छरों के अंडों की संख्या में 92 प्रतिशत की कमी आई थी। मगर

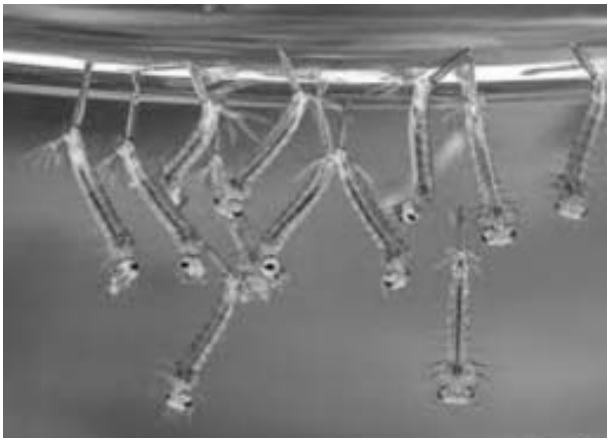

डेंगू के प्रकरणों में कोई कमी नहीं देखी गई थी।

ब्राज़ील के कृषि विकास मंत्रालय से सम्बद्ध कृषि वैज्ञानिक लियोनार्डो मेलगारेजो और ब्राज़ील के क्षेत्रीय उत्तर-पश्चिम विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री एंटोनियो इनाशिओ एंड्रिओली का कहना है कि सारे अध्ययन पूरे होने से पहले इन मच्छरों के व्यापारिक उपयोग की अनुमति देकर जैव सुरक्षा आयोग ने एक गलत व खतरनाक नज़ीर पेश की है। अपने एक तकनीकी पर्चे में इन्होंने कहा है कि टेक्नॉलॉजी का पूरा आकलन करने के बाद ही व्यापारिक उपयोग पर विचार किया जाना चाहिए। इसी प्रकार से दक्षिण प्लोरिडा विश्वविद्यालय के थॉमस उन्नाश ने चेतावनी दी है कि यह टेक्नॉलॉजी बहुत महंगी पड़ेगी। कारण यह है कि यह टेक्नॉलॉजी नपुंसक नरों पर निर्भर है। इसका मतलब है कि ये नर अपने जेनेटिक रूप से परिवर्तित गुण अगली पीढ़ी को नहीं देंगे। तो आपको हर बार करोड़ों नए नर जीएम मच्छर पर्यावरण में छोड़ना होंगे जिसकी लागत करोड़ों डॉलर होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***